Rudraashtakam

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्॥

निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं गिरा ज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकालकालं कृपालं गुणागारसंसारपारं नतोऽहम्॥

तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरम्।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगङ्गा लसद्भालबालेन्दुकण्ठे भुजङ्गा॥

चलत्कुण्डलं भ्रूसुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।
त्रयःशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्॥

कलातीतकल्याणकल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।
चिदानन्दसन्दोहमोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥

न यावद् उमानाथपादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भुतुभ्यम्।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो॥

namāmīśamīśāna nirvāṇa-rūpaṁ
vibhuṁ vyāpakaṁ brahma-veda-svarūpam
nijaṁ nirguṇaṁ nirvikalpaṁ nirīhaṁ
cidākāśamākāśavāsaṁ bhaje'ham

नमामी-शमी-शान निर्वाण-रूपम्
विभुम् व्या-पकम् ब्रह्म-वेद स्व-रूपम्।
निजम् निर्-गुणम निर्-विकल-पम निरी-हम्
चिदा-काश मा-काश वासम् भजे-हम्॥

nirākāramoṅkāramūlaṁ turīyaṁ
girā jñānagotītamīśaṁ girīśam
karālaṁ mahākālakālaṁ kṛpālaṁ
guṇāgārasansārapāraṁ nato'ham

निरा-कार ओम-कार मूलम तुरि-यम
गिरा ज्ञान जो-तीत मी-शम गिरि-शम।
करा-लम महा-काल कालम कृपा-लम
गुणा-गार संसार पा-रम नतो-हम॥

tuṣārādrisaṅkāśagauram gabhīraṁ
manobhūtakoṭiprabhāśrīśarīram
sphuranmaulikallolinīcārugaṅgā
lasadbhālabālendukaṇṭhe bhujaṅgā

तुषा-रादरी संकाश गौरम गभीरम
मनो-भूति कोटि प्रभा-श्री-शरीरम।
स्फु-रन-मौली कल-लौल-नी चारु-गंगा
लसद-भाल बालेन्दु कण्ठे भू-जंगा॥

calatkuṇḍalaṁ bhrūsunetraṁ viśālaṁ
prasannānanaṁ nīlakaṇṭhaṁ dayālam
mṛgādhiśacarmāmbaraṁ muṇḍamālaṁ
priyaṁ śaṅkaraṁ sarvanāthaṁ bhajāmi

चलत-कुण्डलम भ्रू-सु-नेत्रम विशालम
प्रसना-ननम नील-कंठम दयालम।
मृगा-धीश चर-माम-बरम मुण्ड-मालम
प्रियम शंकरम सर्व-नाथम भजामि॥

pracaṇḍaṁ prakṛṣṭaṁ pragalbhaṁ pareśaṁ
akhaṇḍaṁ ajaṁ bhānukoṭiprakāśam
trayaḥśūlanirmūlanaṁ śūlapāṇiṁ
bhaje'haṁ bhavānīpatiṁ bhāvagamyam

प्रचण्डम प्र-कृष्टम प्र-गल-भम परे-शम
अखन-डम अजम भानु-कोटी प्रकाशम।
त्रय शूल निर-मूल-नम शूल पाणिम
भजे-हम भवानी पतिम भाव-गम्यम॥

kalātītakalyāṇakalpāntakārī
sadā sajjanānandadātā purārī
cidānandasandohamohāpahārī
prasīda prasīda prabho manmathārī

कला-तीत कल-याण कल-पान्त कारी
सदा सज्ज-ना-नन्द दाता पुरारी।
चिदा-नन्द संदोह मोहा-पहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्-मथारी॥

na yāvad umānāthapādāravindaṁ
bhajantīha loke pare vā narāṇām
na tāvatsukhaṁ śānti santāpanāśaṁ
prasīda prabho sarvabhūtādhivāsam

न या-वद उमा-नाथ पादार-विन्दम
भजन्तीह लोके परे वा नरा-णाम्।
न तावत-सुखम शान्ति सन-ताप-नाशम
प्रसीद प्रभो सर्व-भूतादि वासम॥

na jānāmi yogaṁ japaṁ naiva pūjāṁ
nato'haṁ sadā sarvadā śambhu tubhyam
jarājanma-duḥkhaugha-tātapyamānaṁ
prabho pāhi āpannamāmīśa śambho

न जा-नामी योगम जपम नैव पूजाम
नतो-हम सदा सर्व-दा शम्भु तु-भ्यम्।
जरा जन्म दू-खौघ ता-तप्य मानम
प्रभो पाहि आपन-नमा-मीश शम्भो॥